बी० ए० भाग — III

प्रथम प्रश्न-पत्र

प्रश्न— काव्य का स्वरूप स्पष्ट करते हुए काव्येतु लक्षणों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—

कवि की रचना को काव्य कहते हैं। कवि जीवन और जगत की अनुभूति को शब्द और अर्थ के सामञ्जस्य का आधार लेकर अपनी प्रतिभा के बल पर रमणीय, रसात्मक और आह्लादकारि बनाकर प्रस्तुत करता है। उसकी पुनः सृष्टि करता है। चूँकि अतीत के गर्भ से ही वर्तमान का जन्म हुआ है। इसलिए हम कुछ प्राचीन आचार्यों द्वारा निर्धारित काव्य लक्षणों को सामने रखकर काव्य के स्वरूप को स्पष्ट करना ~~चाहिए~~ चाहेंगे।

(1) शब्दार्थौ सहितौ काव्यं गद्यं-पद्यं च तत् द्विधा। — भामह

(2) काव्य शब्दोऽयं गुणालंकारसंस्कृतयो शब्दार्थयोर्वर्तते। — वामन

(3) तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकती; पुनः क्वापि — मम्मट

(4) वाक्यं रसात्मकं काव्यं। — विश्वनाथ

(5) रमणीयार्थ-प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्— पंडितराज जगन्नाथ

हिन्दी साहित्य में काव्य के स्वरूप को लेकर मध्यकाल में कोई मौलिक विवेचन नहीं हो सका।

तुलसीदास ने —

हृदय सिंधु मति सीप समाना, स्वाति सारदा कहहिं सुजाना।
जो बरसै बर बारि बिचारू, होइ कवित मुकुता मनि चारू।

कहकर ही काव्य की व्यापक अवधारणा अवश्य प्रस्तुत की किन्तु परवर्ती काव्य - विवेचन पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

केशवदास ने - 'जदपि सुजाति सुलच्छनी, सुबरन सरस सुवृत्त।
भूषण बिन न बिराजई, कविता बनिता मित्त।

कहकर अलंकार की ओर अपना झुकाव प्रकट कर दिया है।

चिन्तामणि ने —

सगुनालंकारन सहित दोष-रहित जो होए।
शब्द-अर्थ ताको कवित कहत विबुध सब कोइ॥

कहकर आचार्य मम्मट के काव्य लक्षण की ही आवृत्ति कर दी है।

भिखारीदास के अनुसार —

रस कविता को अंग, भूषन हैं भूषन सकल।
गुन सरूप औ रंग, दूषन करै कुरूपता॥

अर्थात 'रस' कविता का अंग है, सभी अलंकार उसके आभूषण हैं। गुण उसके

रूप - रंग है और दोष अंग - विकार है जो उसे कुरूप बनाते हैं। परम्परा 'रस' को काव्य की आत्मा मानती है।

आचार्य द्विवेदी जी के बाद भी परम्परागत काव्य - का लक्षण के पुनराख्यान की परम्परा चलती रही। इस क्रम में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, श्री नन्ददुलारे बाजपेयी, जयशंकर प्रसाद और डॉ० नगेन्द्र द्वारा निरूपित काव्य - लक्षण उल्लेखनीय है —

(1) " जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान - दशा कहलाती है उसी प्रकार हृदय की यह मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द - विधान करती आई है, उसे कविता कहते हैं।"

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(2) " कविता ही मनुष्य के हृदय को स्वार्थ - सम्बन्धों के संकुचित मण्डल से ऊपर उठाकर लोक सामान्य भाव भूमि पर ले जाती है जहाँ जगत की नाना गतियों के मार्मिक स्वरूप का साक्षात्कार और शुद्ध अनुभूतियों का संचार होता है।"

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(3) " काव्य आत्मा की संकल्पात्मक अनुभूति है, जिसका सम्बन्ध - विश्लेषण विकल्प या विज्ञान से नहीं है।"

जयशंकर प्रसाद

(4) "आत्मा की मनन शक्ति की वह असाधारण अवस्था जो ज्ञेय सत्य को उसके मूल चाक्षुत्व में सहसा ग्रहण कर लेती है, काव्य में लेकल्पात्मक मूल - अनुभूति कही जा सकती है।"

— जयशंकर प्रसाद

(5) "रसात्मक वाक्यार्थ ही काव्य है और उसकी द्वन्द्वोमयी विशिष्ट विधा आधुनिक अर्थ में कविता है।"

— डॉ नगेन्द्र

उपर्युक्त काव्य - लक्षणों पर विचार किया जाय तो स्पष्ट हो जायेगा कि प्रायः सभी में संस्कृत के आचार्यों की अवधारणा के समावेश के साथ युग के अनुसार कुछ और जोड़ने की प्रवृत्ति विद्यमान है।

आधुनिक काव्य - चिन्तकों में प्रसाद जी ही पाश्चात्य काव्य - चिंतन से प्रभावित नहीं थे। शेष सभी ने सामने अंग्रेजी के कवियों और समीक्षकों द्वारा निरूपित काव्य - लक्षण थे।

20/09/20

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया